अक्षरा फाउण्डेशन का पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम - आई.सी.डी.एस. योजना के साथ प्रभावी तालमेल के लिए एक पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण

के. वैजयन्ती

पृष्ठभूमि

विश्व भर में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में किए गए शोध कार्य दर्शाते हैं कि बच्चे का प्रारम्भिक परिवेश और अनुभव उसके विकास में बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक समृद्ध और सहयोगपूर्ण वातावरण में बच्चों के पास सीखने के कई मौके होते हैं और संज्ञानात्मक विकास की भूमिका केन्द्रीय हो जाती है। भारत में राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखरेख एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) नीति, जन्म–पूर्व काल से छह वर्ष की उम्र तक के सभी बच्चों के समग्र विकास के लिए एकीकृत सेवाएँ प्रदान करने की भारत सरकार की प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करती है।

पिछले दशक में भारत ने सार्वजनिक शिक्षा से जुड़े निवेशों (जैसे कि स्कूलों तक बच्चों की पहुँच बनाना, अधोसंरचना या बुनियादी सुविधाएँ, विद्यार्थियों के नामांकन, शिक्षकों के वेतन और विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात आदि क्षेत्र) में व्यापक सुधार करने की दिशा में अच्छी खासी प्रगति की है। लेकिन लगातार यह देखा गया है[1] कि विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धियाँ बहुत निम्न स्तर की हैं। धीरे–धीरे "सीखने के परिणाम" के सिद्धान्त वाली शिक्षा की योजना बनाने वालों के शब्दकोष में स्थाई जगह बन गई है, क्योंकि उनका पूरा ध्यान स्कूलों तक बच्चों की पहुँच बनाने से हटकर स्कूलों की गुणवत्ता पर जाने लगा है। पूर्व–स्कूली शिक्षा (0–6 साल की आयु–वर्ग वाले बच्चों की शिक्षा और देखभाल, ताकि उन्हें स्कूली जीवन के लिए तैयार किया जा सके) किसी भी स्वस्थ शिक्षा व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण कड़ी होती है।

नोबेल पुरस्कार विजेता जिम हैकमैन द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि पूर्व–स्कूली शिक्षा का बच्चों के सामाजिक–आर्थिक परिणामों पर और साथ ही उनकी संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक क्षमताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा हैकमैन का शोध यह भी दिखाता है कि किस तरह प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरान किए गए प्रयास आगे आने वाले वयस्क जीवन की सफलता और असफलता के जोरदार सूचक होते हैं और यह भी, कि प्रभावी पूर्व–स्कूली शिक्षा किस तरह से प्रारम्भिक कठिनाइयों से होने वाले नुकसानों की आंशिक रूप से भरपाई कर देती है। हाई स्कोप पैरी प्री–स्कूल प्रोग्राम और ऐबेसेडेरियन प्रोग्राम्स पर किए गए दीर्घकालिक अध्ययनों से पता चलता है कि भली प्रकार से समृद्ध प्रारम्भिक वातावरण के परिणामस्वरूप बच्चों की संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक क्षमताओं में काफी विस्तार होता है। अबाउड (2006) ने पाया कि पूर्व–स्कूल जाने वाले बच्चे, न जाने वाले बच्चों की तुलना में "शब्दावली, शाब्दिक तर्क–वितर्क, गैर–शाब्दिक तर्क–वितर्क और स्कूली तैयारी" के मापदण्डों पर बेहतर प्रदर्शन करते हैं। ऐसे ही नतीजे मैग्न्युसन, मेयर्स, रुह्म, वाल्डफोजेल (2004) द्वारा भी प्रकाशित किए गए, जिन्होंने पाया कि "प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रमों और अपेक्षाकृत रूप से ऊँचे अकादमिक स्तरों के साथ सम्भावित रूप से जुड़े हुए कई कारकों को नियंत्रित कर देने के बाद स्पष्ट होता है कि जो बच्चे अपने स्कूली दाखिले से पहले गुजरे वर्ष में किसी पूर्व–स्कूल केन्द्र या स्कूल–आधारित पूर्व–स्कूल कार्यक्रम का हिस्सा बनते हैं, वे किण्डरगार्टन की पढ़ाई शुरू करते वक्त पाठन और गणित से जुड़े कौशलों के आकलन में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह लाभ बच्चों के साथ आगे भी बना रहता है। जब बच्चों के कौशलों को किण्डरगार्टन के बसन्तकालीन सत्र में और पहली कक्षा में आँका जाता है तो उन बच्चों के किण्डरगार्टन में रोके जाने

[1] ASER Reports (2007-2012), PISA Report (2012)

की सम्भावना कम रहती है जो प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रमों में शामिल रह चुके होते हैं। अधिकांश मामलों में, वंचित समूहों के बच्चों के लिए ये प्रभाव सबसे अधिक होते हैं, जिससे यह आशा जगती है कि पूर्व–स्कूलों में वंचित परिवारों के बच्चों के नामांकन को बढ़ावा देने की नीतियों से शायद स्कूली तैयारी के अन्तर को पाटने में मदद मिले।"

इसी पृष्ठभूमि पर अक्षरा पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम को विकसित किया गया।

अक्षरा का अनुभव

अक्षरा ने अपना स्कूली तैयारी कार्यक्रम 2006–07 में बेंगलूरु के आँगनवाड़ी कहलाने वाले 200 समेकित बाल विकास सेवा केन्द्रों में शुरू किया। उन्होंने यह कार्यक्रम वेतनभोगी अध्यापकों की मदद से चलाया जो दिन में दो घण्टे पूर्व–स्कूल शिक्षा के किसी एक अंश को सिखाने में लगाते थे। 2009 में इस कार्यक्रम को पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम के नाम से नई शक्ल दी गई और इसके लिए सीखने–सिखाने की सामग्री (टी.एल.एम.) देकर एक ऐसे विकासपरक, खेल–आधारित पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया गया जो आँगनवाड़ियों में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा लागू किए गए पाठ्यक्रम से जुड़ा था। साथ ही साथ, इस कार्यक्रम ने आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों की टी.एल.एम. को प्रभावी ढंग से (बाल–केन्द्रित, खेल–आधारित ढंग से) इस्तेमाल करने की तथा बच्चों के सीखने के परिणामों को आँकने की क्षमता भी निर्मित की। इसके अलावा इस पुनर्रचित कार्यक्रम ने बाल विकास समितियों के लिए दिशानिर्देश तैयार किए, आँगनवाड़ियों के लिए सामुदायिक सहयोग की प्रक्रियाएँ तैयार कीं और पूर्व–स्कूली शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए अपने सदस्यों को प्रशिक्षित भी किया

अक्षरा ने अपना पूर्व–स्कूल कार्यक्रम इन जगहों में और इन तरीकों से लागू किया है: बेंगलूरु की गैर–अधिसूचित झुग्गियों में (कार्य–शोध परियोजना के रूप में); महिला उद्यमियों द्वारा निजी पूर्व–स्कूलों के रूप में चलाई जा रही बालवाड़ियों के रूप में; और आँगनवाड़ी केन्द्रों के साथ मिलकर तीसरे कार्यकर्ता को प्रदान करने वाले प्रतिरूप में।[2] लेकिन, सबसे ज्यादा पहुँच और विस्तार उस प्रतिरूप का है जो आँगनवाड़ी केन्द्रों में डब्ल्यू.सी.डी. के सहयोग के साथ लागू किया गया है और इस लेख के केन्द्र में भी यही प्रतिरूप है।

अक्षरा का पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम

अक्षरा के पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सीखने–सिखाने की उच्च स्तरीय सामग्री और शिक्षकों की क्षमता निर्मित करने जैसे महत्त्वपूर्ण योगदानों वाले एक 'संरचित' पूर्व–स्कूल कार्यक्रम को अमली जामा पहनाना है। इस वास्ते, कार्यक्रम के अन्तर्गत रोजाना 90 मिनिट की पूर्व–स्कूली शिक्षा देने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। विभिन्न आयामों में बच्चों के विकास को प्रोत्साहन देने के लिए तैयार की गई एक सुनियोजित, शोध–आधारित पूर्व–स्कूल किट (सामग्री) द्वारा भी इसमें सहायता मिली। इसके अलावा इस कार्यक्रम में प्रशिक्षण और निगरानी का एक मजबूत हिस्सा भी था और साथ ही सक्रिय बाल विकास समितियों के माध्यम से लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता भी थी।

कार्यक्रम के चार महत्त्वपूर्ण अंग

1. **<u>स्कूली तैयारी किट/सीखने–सिखाने की सामग्री:</u>** राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 में पूर्व–स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम की कल्पना एक गतिविधि–आधारित, बाल–केन्द्रित, आयु–उपयुक्त, समग्र विकास के लक्ष्य वाले, परिस्थिति के अनुरूप ढले हुए और लचीले पाठ्यक्रम के रूप में की गई है। इसके अलावा, एन.सी.एफ. में यह उल्लेख भी किया गया है कि हमारे पास पूर्व–स्कूली शिक्षा से जुड़ी सामग्री की कमी है और अकसर इसका उपयोग वास्तव में खेल और सीखने के उद्देश्य में होने के बजाय प्रदर्शन के लिए ज्यादा होता है। आई.सी.डी.एस. कर्नाटक ने एक स्रोत पुस्तिका और तदर्थ 'खेल सामग्री' प्रदान की है जिसे सीखने के उद्देश्यों से जोड़े जाने की जरूरत थी। अक्षरा ने सीखने–सिखाने की संरचित सामग्री में यह कमी देखी, जो गतिविधि–आधारित सीखने के लिए संरचित सामग्री की 'गायब कड़ी' है। इस कमी को भरने के लिए अक्षरा ने मौलिक और किफायती टी.एल.एम. वाली किट

[2]For further reference visit www.akshara.org.in

विकसित की। इस किट में लगभग 40 चीजें हैं। इसे कर्नाटक राज्य बाल कल्याण परिषद, राष्ट्रीय सार्वजनिक सहयोग तथा बाल विकास संस्थान (एन. आई.पी.सी.सी.डी.) और आई.सी.डी.एस. के साथ परामर्श करके तैयार किया गया। फिर इसे कार्यक्रम के अन्तर्गत आने वाली सभी आँगनवाड़ियों में वितरित कर दिया गया। यह किट सीखने की बाल–केन्द्रित, गतिविधि–आधारित पद्धति को सहयोग देती है और बच्चों को अपने तौर पर तथा छोटे–छोटे समूहों में काम करने का मौका मिलता है।

2. **क्षमता का निर्माण:** आँगनवाड़ी कार्यकर्ता जो पूर्व–स्कूल शिक्षक भी होती हैं, अप्रशिक्षित होती हैं और उन्हें संरचित पूर्व–स्कूली शिक्षा की कार्यप्रणाली के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता। इस कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों की क्षमताओं का निर्माण बेहद जरूरी है। अक्षरा के प्रशिक्षण में उम्र के हिसाब से बच्चों को अलग करने, कक्षा प्रबन्धन और किट के उपयोग से लेकर बच्चों के आकलन जैसे तमाम मुद्दे शामिल होते हैं। इस कार्यक्रम का एक हिस्सा आई.सी.डी.एस. के पर्यवेक्षकों के लिए उन्मुखीकरण का भी है, ताकि वे सभी पहलुओं से परिचित होकर कर्मचारियों को निरन्तर सहयोग देते रहें।

3. **बाल विकास समितियों (बी.वी.एस.) को सक्रिय करना:** आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के अलावा, अक्षरा में बी.वी.एस. सदस्यों हेतु एक पैकेज तैयार किया गया, जिसमें उन्हें उनकी सहायता के लिए बनी व्यवस्था की भूमिका के बारे में बताया गया और यह भी बताया गया कि वे किस प्रकार आँगनवाड़ी के स्तर पर समस्याओं को पहचान कर सामूहिक प्रयासों के द्वारा उनका स्थानीय समाधान ढूँढ़ सकते हैं।

4. **सीखने के परिणामों का आकलन:** बच्चों के सीखने/ विकास के स्तरों को मापने के उद्देश्य से सीखने के परिणामों के आयु–विशिष्ट सूचकांकों को विकसित किया गया आकलन के इस उपकरण में बच्चे के विकास के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले कौशल–आधारित सूचक शामिल रहते हैं और यह उपकरण गतिविधि–आधारित होता है। कार्यक्रम के द्वारा उसके अन्तर्गत आने वाले तमाम बच्चों का एक कार्यक्रम–पूर्व और कार्यक्रमोत्तर आकलन किया जाता है।

आँगनवाड़ियों में पूर्व–स्कूल शिक्षा कार्यक्रम

अक्षरा ने 2009 से 2012 के बीच बेंगलूरु शहरी जिले की सभी 1776 आँगनवाड़ियों में पूर्व–स्कूल कार्यक्रम लागू किया इस काल में बच्चों के सीखने के परिणामों को आँका गया और उन पर नजर रखी गई। सभी 1776 आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया और लगभग 143000 बी.वी.एस. सदस्यों को भी प्रशिक्षित किया गया।

2012 में अक्षरा ने अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली स्थित प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और विकास केन्द्र (सी.ई.सी.ई.डी) को अपने पूर्व–स्कूल कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए बेंगलूरु शहरी जिले के आँगनवाड़ी केन्द्रों पर आमंत्रित किया। मूल्यांकन में पाया गया कि अक्षरा ने अपने प्रयास की सर्वांगीण योजना बनाई थी ताकि इसमें व्यवस्था को सुधारने के तमाम पहलुओं, जैसे कि सीखने–सिखाने की सामग्री, पर्यावरण, सभी स्तरों के कर्मचारियों का प्रशिक्षण, निगरानी और जन भागीदारी को शामिल किया जा सके। इस अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि यह प्रतिरूप, खासतौर पर इसे जिस व्यापक पैमाने पर लागू किया गया उसके लिए सराहना के योग्य है। इसके अलावा, अध्ययन में यह भी महसूस किया गया कि इस कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान आँगनवाड़ियों के स्तर का आकलन करने के लिए 70 विशेष गुणवत्ता–आधारित सूचक तैयार करना और बच्चों की वार्षिक प्रगति का आकलन करने के लिए 56 सूचकों की आकलन रूपरेखा विकसित करना था। सी.ई.सी.ई.डी. ने माना कि यह जवाबदेही और परिणामों पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत की तरफ बढ़ाया गया एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

वर्तमान में अक्षरा का यह पूर्व–स्कूल कार्यक्रम बेंगलूरु शहरी जिले की 335 आँगनवाड़ियों में लागू किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के कई अंगों को महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर आने वाली अपनी नई नीति में शामिल किया जा रहा है। लेकिन कुछ चुनौतियाँ अभी भी हैं, जैसे कि पूर्व स्कूल पाठ्यक्रम को बच्चों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को समझना; आँगनवाड़ी की कर्मचारियों की क्षमता बढ़ाना, जिनसे अपेक्षा की जाती है कि वे तमाम तरह की सामुदायिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए पूर्व–स्कूल की शिक्षक के रूप

में भी काम करें; सेवा–पूर्व और सेवाकाल के दौरान प्रशिक्षण जैसे व्यवस्थागत मुद्दे; नियमित रूप से निगरानी की व्यवस्था, तथा अपर्याप्त मूलभूत सुविधाएँ। इन सब पर काम किया जाना अभी बाकी है।

References

1. Aboud, F.E. (2006) Evaluation of an early childhood pre-school programme in rural Bangladesh
2. Currie, Janet (2000) Early Childhood Intervention Programmes: What do we know?
3. Draft National Early Childhood Care and Education (ECCE) Policy
4. Heckman- , J.J. (2008) Schools, Skills and Synapses, Economic Enquiry
5. Magnuson, A.K., Meyers, M.K., Ruhm, C.J., and Waldfogel, J. (2004) Inequality in Pre-school Education and School Readiness.
6. Vaijayanti.K, Bangalore Education Profile - A Report Card -2009, Akshara Foundation, Bangalore

वैजयन्ती के., वर्तमान में अक्षरा फाउण्डेशन में शोध कार्य की प्रमुख हैं। फाउण्डेशन एक गैर–मुनाफे वाला संगठन है जो कर्नाटक में प्रारम्भिक बाल्यावस्था और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करता है। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से लेकर स्कूली शिक्षा तक के मुद्दों पर काम करती रही हैं। उनका अधिकांश शोधकार्य, शिक्षा क्षेत्र में साक्ष्य–आधारित नीतिगत शोधकार्य रहा है। वे ASER–कर्नाटक की प्रमुख भी हैं। उनसे vaijayanti@akshara.org.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी